महाप्रभु श्री रामलाल जी

श्री सिद्ध गुफ़ा-एक परिचय

श्री**सिद्ध गुफ़ा** सवांई (एत्मादपुर) आगरा एक ख्याति प्राप्त योग **सिद्ध**पीठ के रूप में पहचाना जाता है। इस स्थान का परिचय देने से पूर्व जिन महायोगेश्वर ने इसकी नींव रखी है उनका परिचय भी अपरिहार्य है। योगियों के अधिपति महाप्रभु श्री रामलाल जी महाराज बीसवीं शताब्दी के एक ऐसे महापुरुष हैं, जो लुप्त योग विद्या के प्रकाशक होने के साथ-साथ अपने भक्तों में शिव स्वरूप में आराध्य हैं। घोर दुःख एवं ताप से संतप्त जीवों को,देखकर करुणार्द्र होकर जीव को परम शान्ति एवं त्राण देने के लिये तथा योग का अमर पथ दिखाने के लिये सृष्षि में चिरंजीवी अमरगुरु के रूप में विद्यमान रह कर योगालोक से जीवों को मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। परम **सिद्ध**योगेश्वर होने के कारण वे एक ही समय में अनेक स्थानों पर प्रकट होकर कल्याण कार्य किया करते हैं| **"अचिन्त्य शक्तिमान योगी नाना रूपाणिधारयेत्"** के सिद्धान्तानुसार वे नाना रूपों को धारण कर संसार का कल्याण किया करते हैं।

लोक व्यवहार में इनका आविर्भाव उन्नीसरवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में सन् १८८८ में गुरुओं की पवित्र नगरी अमृतसर में स्व नामधन्य प्रसिद्ध ज्योतिर्विद पं० गण्डाराम जी के घर में हुआ था। इनकी माता का पावन ना भागवन्ती देवी था। चैत्र शुक्लनवमी में प्रकट होने के कारण इनके पिता श्री ने इनका नाम 'रामलाल' रखा। चार अक्षरों का यह नाम मानों | को धर्म, अर्थ आदि चारों फल प्रदान करने वाला है| बाल्यकाल से ही परिवार तथा पड़ोसियों ने इनकी अलौकिक शक्ति देख ली थी। १५ वर्ष की अल्पायु में ही घर परिवार को त्यागकर बाहर निकल पड़े। लोक
व्यवहार में विद्याध्ययन के लिए कुरुक्षेत्र पहुँचे, वहाँ कुछ व्यवधान देखकर कनखल हरिद्वार चले गये। वहाँ भी नगर तथ कुटम्ब के लोग आने जाने लगे। इसलिये अधिक दिन तक नहीं रुक पाये। भगवान की पावन बृजभूमि का दर्शन करते हुये वे नगर ग्राम होते हुये बरहन पहुँच गये। वहाँ से आगे बढ़ते हुये ग्राम सवाई में इनका आगमन इंआ।

श्री- **सिद्ध गुफ़ा**-का निर्माण-- -

गाँव सवाई में पंधारंने पर सर्वप्रथम लां० प्योरेलाल को इनके दर्शन हुये। वे स्वभाव से. ही पुण्यात्मा, साधु महात्माओं में श्रद्धा रखने वाले परम साधु सेवी थे। वे आनन्दकन्द श्री प्रभु जी के परमभकक्त बन गये। परमाराध्य जीवन धन अपने गुरुदेव को पाकर वे हर समय आनन्द विभोर रहा करते थे। अब उनके पास हर समय स्त्री पुरुषों की भीड़ उमड़ने लगी | जो जिस भाव से आता था उसकी मनोकामना पूर्ण होती थी | भक्त प्यारेलाल के घर पर श्री प्रभु जी के चरण कमल पड़ने के कारण सकल सम्पत्तियों का वास होने लगा। घर धन-धान्य से पूर्ण हो गया। लाला जी हर समय श्री प्रभु जी की सेवा में लगे रहते थे और प्रार्थना किया करते थे कि उन्हें कोई सेवा बतायें। श्री प्रभुजी हर समय जन समुदाय से घिरा रहना नहीं चाहते थे। इसलिये उन्होंने लाला प्यारेलाल को आज्ञा दी कि उनके लिये एक गुफा का निर्माण कर दें। इनकी आज्ञा को पाकर ग्रामवासियों ने कदम के वृक्ष के पास ही गुफा का निर्माण कर दिया। गुफा बन जाने के पश्चात् वे लोग अभी बाहर निकले ही थे कि गुफा गिर गयी। उन लोगों ने विचार किया कि सम्भवतः गुफा की दीवार पतली रह गई है। उन्होंने दूसरी जगह पर गुफा का निर्माण कर लिया। अब की बार इस उत का ध्यान रखा गया कि गुफा की छत मोटी हो। किन्तु पूर्व की भाँति इस बार भी यह गुफा गिर गई। भक्त लोग काफी निराश हो गये | अब की बार उन्होंने निर्णय लिया की श्री प्रभुजी जिस स्थान पर गुफा बनाने का आदेश प्रदान करेंगे वहीं पर ही बनावेंगे; अपनी इच्छा से नहीं। सभी ने प्रार्थना की प्रभुजी हमने अपनी इच्छा से गुफा का निर्माण किया था किन्तु परिश्रम के बावजूद हमारे हाथ निराशा ही लगी। अब कृपा करके हमें वह स्थान बतायें जहाँ पर हम आपके लिये गुफा बनाकर तैयार कर लें | श्री प्रभु जी ने सहर्ष स्थान बता दिया | वह स्थान कंकरीला था | वहाँ पर गुफा का निर्माण कर लिया गया। अपनी सफलता पर सभी को महान आनन्द मिला |

यह सन् १६११ की बात है| गाँव के पुराने वृद्ध जन ठा. पातीराम व दौलतराम आदि बतलाया करते थे कि गुफा हम लोगों ने खोदी थी। हम लोग उस समय १४-१५ वर्ष के ही थे |"

ला० प्यारेलाल ने श्री प्रभुजी की आज्ञा के अनुसार पास में ही एक तालाब का निर्माण कर लिया। श्री प्रभु जी अब उनमें स्नान करने लगे। अपने भक्तों की श्रद्धा और प्रेम को देखकर उन्होंने इस तालाब में शक्तिपात किया और वरदान दिया कि इस तालाब में जो भी चर्म-रोगी या वात-रोगी स्नान करेगा वह रोग-समुक्त हो जायेगा। अब गाँव तथा आसपास के सूखा-वाय तथा चर्म-रोगी आकर स्नान करने लगे और सभी ठीक होते चले गये। श्री प्रभुजी की यह आज्ञा थी कि स्नान करने के बाद गीले वस्त्रों को उतार कर वहीं पास में फैंक दें और नये वस्त्र पहन लें । इस तालाब का नाम श्री प्रभुजी ने 'अमृत-कुण्ड' रख दिया।

इस गाँव में रहते हुये लोगों ने इनके बहुत अद्‌भुत चरित्र देखे। एक दिन प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में कुछ लोग उनके दर्शन की अभिलाषा से भुफा के द्‌वार तक पहुँचे। वहाँ उन्होंने श्री प्रभुजी को महादेव के रूप में देखा। कटि पर व्याप्रचर्म है जटायें नीचे तक लटकी हैं हजारों की संख्या में सर्प उनके शरीर पर लिपटे हुये हैं। उनमें से कोई-कोई भयंकर फुक्कार कर रहा है। वे लोग चुपचाप पीछे हटने लगे। श्री प्रभुजी ने आवाज देकर उन्हें वापस बुलाया और कहा-भाई ! डरो मत यह सर्प तो तुम्हारे ही भाई हैं तुम्हें कुछ न कहेंगे; किन्तु भविष्य में तुम भी सूर्योदय से पहले मेरे पास नहीं आना। श्री प्रभु जी के पास कोई स्त्री नहीं आ सकती थी। भोजन श्री प्रभुजी या तो स्वयं बना लेते थे अथवा किसी ब्रह्मचारी ब्राह्मण से बनवा लेते थे | श्री प्रभु जी के पास दो कुत्ते रहा करते थे जिन्हें श्री प्रभुजी की इच्छाओं का बराबर ज्ञान रहता था। बाग में आने वाले पुरुषों से वे कुछ नहीं कहते थे किन्तु स्त्री को देखते ही काटने दौड़ते थे। श्री प्रभु जी की अहैतुकी कृपाओं के बारे में सुनकर लोग भली भाँति समझ गये थे कि ये कोई परिपूर्ण सिद्‌ध महापुरुष हैं। वे लोग उनसे कोई विशेष चमत्कार की प्रार्थना किया करते थे। श्री प्रभु जी उनसे कहते-भई ! हम क्या चमत्कार दिखायेंगे। तुम लोग मन लगाकर ईश्वर का भजन किया करो, तुम्हारे अन्दर अपने आप ही चमत्कार होने लग जायेंगे। किन्तु लोग चमत्कार दिखाने का हठ करते ही रहे | एक दिन लोगों की भीड़ लगी हुई थी। श्री प्रभु जी ने कहा-तुम सब लोग अपनी आँखें बन्द कर लो। इसके बाद कहने लगे-अब आँखें खोल लो | उनकी आज्ञा पाकर सबने आँखें खोलनी चाही किन्तु सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ कि उनकी आँखे खुल ही नहीं रही थीं। उनको कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। न किसी को कोई आवाज सुनाई दे रही थी और न ही वस्तु का स्पर्श ज्ञान हो रहा था। उन्हें केवल अन्धकार ही अन्धकार अनुभव में आ रहा था। समय व स्थान का कोई बोध नहीं हो रहा था। उन्हें केवल यह अनुभव में आ रहा था कि नीचे से जमीन हट गई है और वे प्रतिक्षण नीचे को गिरते चले जा रहे हैं| उन्हें कोई आधार नहीं मिल रहा था, जहाँ पर पहुँच कर वे टिक जायें | उन्हें लग रहा था कि बहुत समय से वे इस प्रकार गिरते ही जा रहे हैं। वे मन ही मन सोच रहे थे कि बाबा से हट करके हम संकट में पड़ गये हैं। ऊपर की ओर देखने का प्रयत्न किया तो उन्हें लगा कि बड़े-बड़े सर्प उन्हें खाने के लिये दौड़ रहे हैं। उन्होंने तीव्रता से श्रीप्रभु जी को याद किया। श्री प्रभु जी ने उनसे कहा-'अब तुम लोग अपनी आँखें खोल लो।' सबने आँखें खोल ली और जागृत अवस्था में आ गये। उनका शरीर पसीने से तरबतर हो रहा था। उन्होंने धीरे-धीरे श्री प्रभु जी को प्रणाम किया और चुपचाप बाग से बाहर निकल गये।

श्री प्रभु जी अचिन्त्यशक्तिमान योगी हैं | वे एक ही समय में भिन्न-भिन्न स्थानों पर, भिन्न-भिन्न लोगों को मिले। एक दिन की बात है वे श्री सिद्‌धगुफा के पास बच्चों को नित्य की भाँति कुश्ती लड़वा रहे थे। उसी दिन विशेष पर्व पर गंगास्नान के लिये गये हुये अनेक लोगों को अनेक स्थानों पर मिले | ठा० लालाराम को सोरों में, राजघाट में खेतपाल को व कानपुर में प्यारेलाल को स्नान करते हुये मिले। जब ये लोग गुफा पर पहुँचे तो देखा कि श्री प्रभुजी वहीं विराजमान हैं। लोगों से पता चला कि वे कहीं गये ही नहीं थे।

श्री प्रभुजी का मन जनसमुदाय में अधिक दिन नहीं लग सकता था। वे अब नेपाल हिमालय की ओर जाना चाह रहे थे | भक्तों ने उनके भाव को जानकर प्रार्थना की कि 'आप गुफा को छोड़कर कहीं न जायें। आप की समाधि में अब बिल्कुल बाधा नहीं डालेंगे। श्री प्रभु जी गुफा के अन्दर प्रवेश कर गये | गुफा में एक ही दरवाजा है जो आज भी वैसा ही है। बाहर आने जाने का दूसरा कोई मार्ग नहीं है। कुछ भक्त गुफा के बाहर बैठकर देखभाल किया करते थे। गुफा का दरवाजा बन्द होने के बावजूद श्री प्रभुजी अणिमासिद्धि से शरीर को सूक्ष्म बनाकर बाहर निकल गये। वे आकाश मार्ग से विहंगम गति से जा रहे थे। मार्ग में सवांई गाँव का एक किसान खेत में हल जोत रहा था । प्रातः ४ बजे का समय था। श्री प्रभुजी को आकाश से जाते देखकर वह भयभीत हो गया। वह समझ नहीं पा रहा था कि आकाश में प्रकाशमान यह क्या रूप है ? श्री प्रभुजी उसे भयभीत "जानकर आकाश में स्थिर हो गये और उस व्यक्ति से कहने लगे-अरे सूखा ! तू क्यों डर रहा है मैं वही गुफा वाला बाबा हूँ। हिमालय की ओर जा रहा हूँ तुम किसी प्रकार का भय मत मानो | हमारी कृपादृष्टि सदा तुम पर रहेगी ।" ऐसा कहकर श्री प्रभुजी पुनः: आकाश पथ से चले गये। सूखा श्री प्रभुजी का अभयदान तथा आशीर्वाद पाकर आनन्दित हो रहा था। वह दौड़ता हुआ गुफा पर पहुँच गया और वहाँ उपस्थित लोगों को श्री प्रभुजी के नेपाल गमन की सूचना दी। भक्तों को उसकी बात पर विश्वास नहीं हो रहा था। क्योंकि गुफा में भीतर जाने का एक ही दरवाजा था और वह भी बन्द था। इसलिये दरवाजे के बगल की मिट्टी खोदकर अन्दर प्रवेश पाने के लिये रांकीर्ण मार्ग बना लिया गया और एक पतले शरीर वाले व्यक्ति को अन्दर प्रवेश कराया गया। उसने अन्दर जाकर देखा तो उसे केवल एक पुस्तक व कमण्डल के अतिरिक्त कुछ न मिला। श्री प्रभु जी वस्तुतः जा चुके थे। भक्त लोग अत्यन्त अधीर होकर रुदन करने लगे। तब इस प्रकार आकाशवाणी हुई "तुम लोग अधीर मत होओ। हम सदा तुम्हारे साथ हैं | १२ वर्ष के बाद एक बार पुनः आयेंगे तब पहचान लेना |

श्री प्रभुजी का १०-१२ वर्ष के पश्चात पुनः श्री सिद्धगुफा में आगमन हुआ | पहले श्री प्रभुजी वनखण्डी वेश में रहा करते थे। तन पर केवल एक कोपीन रहती थी। पुनः अब आये तो विप्र-वेश था। धोती-कुर्ता तथा सिर पर सफेद पगड़ी सुशोभित थी। वे जन सामान्य में अमरविद्या योग के प्रचार प्रसार में लग चुके थे | कई आश्रमों की स्थापना हो चुकी थी | योग साधन आश्रम ऋषिकेश की स्थापना १६२६-३० के लगभग पूर्ण रूप से हो चुकी थी। इससे पहले वे कालीकमली वाले की धर्मशाला में निवास किया करते थे | अज्ञानान्धकार से जीव का उद्धार योग से ही सम्भव है | इसलिये उन्होंने अपने संस्कारी शिष्यों को अपने पास खींच लिया। उनके प्रधान शिष्यों में योगिराज मुल्खराज जी महाराज, योगिराज श्री चन्द्रमोहन जी महाराज, ब्रह्मचारी गोपालानन्द जी, श्री योगी नृसिंह मूर्तिजी, द्रोपदी देवी जी, ऋषिदेवी जी मुख्य हुये। उन्होंने समस्त भारत में योग-विद्या का प्रचार-प्रसार किया। श्री प्रभुजी के समय में पंजाब में लाहौर में भी योगाश्रम था। वहाँ से भी योग प्रचार का सूत्रपात हुआ है। ब्रह्मचारी गोपालानन्द जी महाराज लाहौर आश्रम के प्रधानाचार्य थे। उन्होंने योग साधना की क्रियाओं का जनसामान्य में प्रचार किया | योग की क्रियाओं से रोगों की निःशुल्क चिकित्सा, तथा आत्मज्ञान के लिये ध्यान योग की अदभुत शिक्षा श्री प्रभुजी के आश्रमों में

दी जाने लगी थी। रोगियों के समस्त रोग दूर हो जाते फिर वही व्यक्ति आश्रमों से जुड़ते और अधिक शान्ति, आनन्द एवं ज्ञान के लिये लालायित रहने लगे। शक्तिपात दीक्षा पद्धति से श्री प्रभुजी जिज्ञासुओं को योग दीक्षा देते दीक्षा के साथ ही उनकी योग की भूमिकायें प्रकट होने लगती थीं। श्री प्रभुजी की कृपा से साधक मन की एकाग्रता को पाकर योग की अमूल्यनिधि से परिचित होते और अपनी पूर्ण चेतना को इस ओर पूर्ण रूप से लगाकर समाधि की ऊँची-ऊँची श्रेणियों में पहुँच जाते। अपने अन्दर अद्भुत शक्ति का विकास तथा ब्रह्मांनन्द में डूबने वाले साधक भला अब योग से कैसे अलग हो सकते ? 'नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन रात" की उक्ति अपरोक्षानुभूति वाले योगी पर अक्षरशः चरितार्थ होती है।

श्री प्रभुजी ने बड़े-बड़े आश्रमों की स्थापना नहीं की | उन्होंने संसार को महान गुरु प्रदान किये हैं। जिन्होंने आगे चलकर योग का अदम्य उत्साह से प्रचार किया है| जो भी व्यक्ति किसी के माध्यम से श्री प्रभु जी के चिन्तन से जुड़ जाता है, उस पर कृपा स्वतः होने लगती है। गुरुदेव श्री चन्द्रमोहन जी महाराज ने अब सवांई आश्रम में ही अपने योग प्रचार के महाभियान को तेज करने का मन बना लिया। सन् १६५० तक पहुँचते-पहुँचते काफी लोग आश्रम से जुड़ चुके थे। श्री प्रभुजी की इस गुफा का नाम श्री गुरुदेव जी ने सिद्धगुफा रखा। यह गुफा सिद्धों से सेवित है तथा सभी से वन्द्य होने के कारण इस गुफा का सिद्ध गुफा समीचीन लगा और शनैः शनैः यह नाम सर्वत्र प्रसिद्ध हो गया। सन् १६५० में श्री चैत्र की रामनवमी पर १००-१५०७ भक्त सम्मिलित हुये। श्री गुरुदेव ने दिन रात अथक प्रयत्न करके अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक मानव के परम कल्याण का मार्ग देने के लिये परिश्रम किया है। प्रतिवर्षरामनवमी के उत्सव को उन्होंने 'योग महामेला' के रूप में मनाया है। उनका लक्ष्य था इन उत्सवों के माध्यम से अधिकारी व्यक्ति योग मार्ग के अटल सिद्धान्त को समझकर आत्ज्ञान की ओर प्रवृत हो जाये। योग साधना के द्वारा अपनी चेतना का पूर्णतया विकास करके किस प्रकार से साधक परम श्रेयस की ओर बढ़ सकता है। इसी का उपदेश उन्होंने अपने प्रचार के कार्यक्रमों में किया है। उन्होंने समस्त भारत को एक सूत्र में बाँध दिया था। गाँव-गाँव नगर-नगर जाकर अपने अन्दर की दिव्यता को जागृत करने की शक्ति दी है| श्री रामनवमी या और कोई भी उत्सव होता था उस समय भारत के कोने-कोने से लोग आते थे और समूचा भारत एक आंगन के नीचे विभिन्न क्षेत्र जाति के लोंग योगिराज के चरण शरण में आकर अपने क्लेशों की निवृत्ति के उपाय का मार्ग पूछते और यथेष्ट सहायता पाते । गुरुदेव की ही कृपा थी जो उन्होंने सहस्त्रों लोगों के मन में महायोगी करुणार्णव महाप्रभु श्री रामलाल जी महाराज की दिव्य शक्तियों का परिचय देकर देश विदेश में घर-घर में उनकी पूजा-अर्चना का विधान एवं महत्ता को समझाकर लोगों का जीवन धन्य बना दिया है। आज महाप्रभु रामलाल जी महाराज का जन्मोत्सव रामनवमी के रूप में भारत में ही नहीं अपितु विश्व के कोने-कोने में रहने वाले लोग अत्यन्त श्रद्धा के साथ मनाते हैं।

गुरुदेव ने श्री सिद्धगुफा आश्रम को योग-प्रशिक्षण केन्द्र के रूप में प्रतिष्ठापित किया है। गुरुदेव के शिष्य भारत में ही नहीं अपितु इटली, इग्लैण्ड, अमेरिका आदि स्थानों पर रहते हुये गुरुदेव से प्राप्त शक्ति एवं साधना से अपने को युक्त करके अविनाशी जीवन की आरे बढ़ रहे हैं।

वस्तुतः देखा जाये तो आज योग का देश-विदेश में जितना भी प्रचार प्रसार हो रहा है वह महाप्रभु रामलाल जी के शिष्य-प्रशिष्यों के द्वारा संचालित आश्रमों से ही हो रहा है।

गुरुदेव की योग जगत को अमूल्य देन है। अपने जीवन के ५० वर्ष उन्होंने योग विद्या के प्रचार-प्रसार में लगाये हैं। अनेक बार अखिल भारतीय योग सम्मेलनों में अध्यक्ष पद को सुशोभित करके योग विद्या की अक्षुण्ण गरिमा को बनाये रखने में अपनी गौरवमयी भूमिका निभाई है। सन् १६८६ में विश्व योग सम्मेलन में अध्यक्ष पद पर रहकर तत्कालीन महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने योग शिरोमणि की उपाधि से सम्मानित किया। शास्त्रों में श्रोत्रीय ब्रह्मनिष्ठ योगी से अध्यात्मविद्या को प्राप्त करने की बात कही गई हैं हमारे गुरुदेव योगशास्त्र के पारंगत तो थे , महान सिद्धयोगी होने से ब्रह्मनिष्ठ योगी भी थे | गुरुदेव ने एक बार प्रसंगवश कहा था 'योगदर्शन की ऐसी कोई विभूति नहीं है जिसे हमने आनन्दकन्द श्री प्रभुजी की कृपा से स्वायत्त न किया हो। श्री गुरुदेव का अपने योग प्रचार कार्यक्रमों में एक ही लक्ष्य रहा है कि मनुष्य अपने जीवन में योग को अंगीकार करके जीवन को ज्योतिर्मय बना ले। प्रत्येक व्यक्ति भगवान् के आदेश '“तस्माद्योगी भवार्जुन को मानकर जीवन को दिव्य अविनाशी बना ले | गुरुदेव कहा करते थे, साधक को अज्ञ नहीं विज्ञ होना चाहिये | क्योंकि 'अज्ञ और अश्रद्धालु व्यक्ति परमार्थ पथ से च्युत हो जाता है।

संसार में योग का प्रचार प्रसार हो इसलिये आनन्द कन्द श्री प्रभुजी ने अपने सामने कई आश्रमों की स्थापना की। ऋषिकेश में श्री योग साधन आश्रम की स्थापना की| सन् १६३८ तक अपनी लीला संवरण तक वहाँ रहे । उसके बाद उनके वरिष्ठ शिष्य योगिराज मुल्खराज जी महाराज सन् १६६० तक आश्रम का संचालन करते रहे। उनके निर्वाण के बाद गुरुदेव चन्द्रमोहन जी महाराज प्रधानाचार्य के रूप में इस पावन आश्रम को अपने जीवन के अन्तिम समय तक सुशोभित करते रहे। श्री प्रभुजी ने अमृतसर में छेहरटा में भी योग साधन आश्रम की स्थापना की थी। इस प्रकार से श्री प्रभुजी के द्वारा संवाई गाँव में श्री सिद्धगुफा के साथ-साथ अनेक आश्रमों की स्थापना की गई। श्री सिद्ध गुफा श्री प्रभुजी का सबसे पुराना आश्रम है। नेपाल हिमालय को प्रस्थान से पूर्व उन्होंने यहाँ कुछ वर्ष निवास किया था। अतः यह आश्रम उनकी ऐतिहासिक स्मृति है। सिद्धगुफा की पवित्र रज को जो श्रद्धापूर्वक चाटते हैं वे समी आधि-व्याधियों से मुक्त हो जाते हैं। श्री प्रभुजी ने योग का दुनियाँ में प्रकाश फैलाने के लिये जगह-जगह केन्द्र खोले। पंजाब में लाहौर में श्री प्रभुजी का आश्रम था जहाँ से उस क्षेत्र में योग का प्रकाश फैला है। यद्यपि श्री प्रभुजी ने लाहौर में स्थायी आश्रम नहीं बनाया। वे त्रिकालज्ञ थे इसलिये जानते थे कि भारत का बंटवारा होगा और लाहौर पाकिस्तान में चला जायेगा। गुरुदेव अनन्त श्री चन्द्रमोहन जी महाराज एक बार इस रहस्य को अपने मुखार विन्द से बताते हुये कह रहे थे कि एक दिन लाहौर में मास्टर हुकुमचन्द ने श्री प्रभुजी से कहा-'आप यहाँ लाहौर में एक बड़ा आश्रम क्यों नहीं बनाते ? आप अमृतसर में ही आश्रम को सीमित क्यों रखना चाहते हैं ? लाहौर पंजाब की राजधानी है इसलिये यहाँ एक आश्रम अवश्य होना चाहिये ।” इस पर श्री प्रभुजी का उत्तर था 'हुकुमचन्द | एक समय

वह आयेगा जब जिन मकान बंगलों में तुम रह रहे हो वे सब तुम्हारे नहीं रहेंगे। भारत का बंटवारा होगा और लाहौर पाकिस्तान में चला जायेगा। तुम्हें सब कुछ छोड़ कर यहाँ से जाना पड़ेगा |" श्री प्रभुजी की बात उस समय अटपटी लग रही थी क्योंकि उस समय ऐसा कोई सोच भी नहीं सकता था। यह विभाजन से १२-१५ वर्ष पहले की बात थी। किन्तु प्रभुजी की बात अक्षरशः सत्य हुई | सन् १६३८ में श्री प्रभुनी के लीलावसान के पश्चात आश्रमों का संचालन का भार श्री मुल्खराज जी महाराज के कन्ध गें पर आया | गुरुदेव श्री चन्द्रमोहन जी महाराज कभी जन्म स्थान की ओर चले जाते तो कभी श्री वृन्दावन धाम ! १६४२ में गुरुदेव श्री चन्द्रमोहन जी महाराज ने प्रथम बार श्री सिद्ध गुफा के दर्शन किये। श्री प्रभुजी के समय में ही गुरुदेव जी एक बार ऋषिकेश आश्रम से ही बद्रीनाथ से आगे शतपथ की ओर जाने का विचार बना कर चल पड़े थे। उनका विचार था कि उधर ही अब निर्विकल्प समाधि में अवस्थित रहकर आत्मानन्द में लीन रहेंगे। श्री प्रभुजी उस समय ऋषिकेश नहीं थे | इनके भावों को जानकर उन्होंने अल्मोड़ा (नैनीताल) से पत्र लिखा-चि० हम बस्तियों में बैठे हैं। और योग का प्रचार कर रहे हैं और तुम हिमालय की ओर जा रहे हो, यह उचित नहीं है। अभी हमें तुमसे बहुत कार्य कराना है इसलिये तुम कहीं मत जाना।" श्री प्रभुजी की आज्ञा को पाकर इन्होंने वनों में जाने का विचार छोड़ दिया। सन् १६४२ में जब गुफा के दर्शन किये तब उन्हें लगा-कि अब समय आ गया है श्री प्रभुजी के योग प्रचार के महान संकल्प को मूर्तरूप देने का ! तभी से स्थायी रूप से श्री प्रभुजी की तपोस्थली में रहकर उन्होंने प्रचार करना प्रारम्भ कर दिया। उन्होंने श्री सिद्धगुफा को विश्व में विख्यात योग सिद्धपीठ के रूप में प्रतिष्ठित किया है। उन्होंने योग के क्षेत्र में जो किया है वह आज संसार के सामने है। श्री प्रभुजी की दो प्रमुख शिष्यायें हुईं जिन्होंने योग के प्रचार-प्रसार के लिये आश्रम की स्थापना की। बड़ी शिष्या योगिनी ऋषिदेवी ने अमृतसर में भूषणपुरा में सतीआश्रम की स्थापना करके योग का प्रचार किया। माताद्रोपदी देवी जी ने अमृतसर में ही कुठब्वोवेरी में द्रोपदी सत्संग योग आश्रम की स्थापना कर समाज को प्रकाश दिया है। गुरुदेव श्री चन्द्रमोहन जी महाराज ने अपने सामने ही योग विद्या के प्रचार-प्रसार के लिये कई आश्रम स्थापित किये | ऋषिकेश आश्रम के संचालन का भार श्री मुल्खराज जी के बाद उन्हें ही सौंपा गया क्योंकि यह श्री प्रभुजी का स्थापित आश्रम है इसलिये उनका ही शिष्य इसे चलाये इस निर्णय से श्री प्रभुजी के ट्रस्ट ने श्री गुरुदेव जी को उसे स्वयं चलाने की प्रार्थना की थी। श्री गुरुदेव ने सारे भारत के नगर-नगर, गाँव-गाँव में जाकर योग का प्रचार किया। इसलिये कई स्थानों पर आश्रमों की स्थापना होना आवश्यक था। दिल्ली में आर.के. पुरम, सेक्टर ४ में योग केन्द्र स्थापित किया। इसी प्रकार से लखनऊ, इटावा, अलुपुर, सालवन में आश्रम की स्थापना कर योग प्रचार को वृहद रूप दिया था। आज प्रचार का जो रूप है वह एक दिन के प्रयास की परिणति नहीं है। इसमें बहुत परिश्रम, त्याग एवं परोपकार की भावना की आवश्यकता होती है| उनके लीलासंवरण के पश्चात् भी उनकी इच्छा के अनुसार आगे उनके शिष्यों ने स्थान-स्थान पर आश्रम बनाकर घर-घर में योग प्रचार के उनके संकल्प को साकार रूप दिया है। कुरुक्षेत्र में, घरौण्डा (करनाल) में कांगड़ा एवं मण्डी (हिमाचल) में आश्रम स्थापित हो चुके हैं। उ. प्र. में सहारनपुर तथा बुलन्दशहर में, राजस्थान में गंगापुर में, गुजरात में कच्छ भुज में गुरुदेव के शिष्यों ने स्थायी आश्रम बनाये हैं| दक्षिण भारत में श्री नृसिंह योगी जी महाराज के शिष्यों ने स्थान-स्थान पर आश्रम स्थापित किये हैं। आन्ध्र प्रदेश में विजयवाड़ा में तथा कर्नाटक में मैसूर में यागाश्रम

स्थापित हो चुके हैं। श्री योगिराज मुल्खराज जी महाराज के मुख्य तीन शिष्यों में देवीदयाल जी महाराज, श्री रामप्यारा जी तथा चमनलाल कपूर ने आश्रमों की स्थापना की है।

देवीदयाल जी महाराज ने अपने जीवनकाल में हरियाणा, पंजाब उ०प्र० में बहुत रो आश्रम स्थापित किये। हरियाणा में उनके प्रत्येक प्रमुख शहर में योगाश्रम स्थापित हैं | श्री रामप्यारा जी सहाराज ने अमृतसर मे लुधियाना ना उत्प्र० में साहिबाबाद में आश्रम स्थापित किये हैं। प्रोण चमनलाल कपूर जी ने होशियारपुर (पंजाब) में बहुत बड़ा आश्रम स्थापित किया है और हरियाणा, पंजाब, हिमाचल के कई शहरों में इनका प्रचार कार्य चल रहा है।

श्री प्रभुजी शिष्य प्रशिष्यों के जहॉ-जहाँ भी आश्रम हैं वहाँ आनन्दकन्द श्री प्रभुजी की नित्य आरती सत्संग तथा पाठ होता है। इसके साथ-साथ इन आश्रमों में जीवन तत्व साधन, प्राणायाम बन्धमुद्राओं की शिक्षा के साथ-साथ यौगिक क्रियाओं से रोगियों की निःशुल्क चिकित्सा होती है। श्री प्रभुजी के आश्रमों से जुड़कर व्यक्ति रोगों से त्राण तो पा ही रहा है साथ ही मन की शांति तथा आत्मविकास का मार्ग भी उसे मिल रहा है। श्री प्रभुजी के आश्रम भारत के बाहर भी हैं। इटली में पेरूजा में तथा अमेरिका में (लावेल) में स्थायी आश्रम हैं जहाँ से श्री प्रभुजी के योग का अमर सन्देश निरन्तर प्रसारित हो रहा है।

श्री प्रभुजी ने हिमालय जाने से पूर्व कुछ दिन रहकर जिस स्थान को पवित्र बनाया और योग की प्रथम प्रकाश किरण फैलाई, वह सिद्धगुफा सवांई है जो सभी आश्रमों की श्रद्धा शक्ति का केन्द्र बनकर संसार को योग के दिव्य प्रकाश से आलोकित कर रहा है। आज के रज-तम प्रधान वातावरण में योग ही मनुष्य को सब प्रकार से त्राण देकर त्रयताप से उसे बचा सकता है।

इस प्रकार से अतिपावन स्थल श्री **सिद्ध गुफ़ा** (सवाई) श्री प्रभुजी का स्मृति चिन्ह तो है ही साथ ही सम्पूर्ण भारत में योग एवं अध्यात्म केन्द्र के रूप में सुप्रतिष्ठित भी हैं। **सिद्ध**योग परम्परा को सजीव रखने के लिये आज देश को इसकी सबसे अधिक आवश्यकता है।